नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ

(विशेष संदर्भ 'बलचनमा' और 'मढ़ी का दीवा')

Portrayal Of Social Reality In The Novels Of Nagarjun And Gurudayal Singh

(Special Reference 'Balachnama' And 'Madhi Ka Diva')

एम.फिल. तुलनात्मक साहित्य उपाधि हेतु

लघु शोध-प्रबंध

सत्र -2014-2015

शोधार्थी

रेनू सिंह

एम.फिल. तुलनात्मक साहित्य

पंजीयन सं.-2014/02/205/008

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

साहित्य विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय

यू.जी.सी. द्वारा "A" ग्रेड प्राप्त

गांधी हिल्स,वर्धा -442005(महाराष्ट्र)भारत

दूरभाष:07152-251170,बेबसाइट: WWW.HINDIVISHWA.ORG

भूमिका

भूमिका

साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब प्रस्तुत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हमारे आस – पास के परिवेश में जो भी घटित होती है, साहित्य उसे आत्मसात कर हमारे समक्ष प्रस्तुत कर देता है। गद्य हो अथवा पद्य वास्तविकता को प्रस्तुत करने वाला होना चाहिए।

आज की युगीन परिस्थितियों में व्यक्ति में बेचैनी व छटपटाहट बढ़ती जा रही है, साधारण व्यक्ति शोषण की चक्की में पिस रहा है, शक्तियों का केंद्रीकरण होने से आर्थिक विषमता बढ़ती जा रही है । समय और परिस्थिति के अनुसार सामाजिक यथार्थ का उदघाटन करना साहित्य का महत्त्वपूर्ण कार्य है।

सामाजिक यथार्थ को अनेक साहित्यकारों ने अपनाया ऐसे ही दो साहित्यकार हैं – **'नागार्जुन'** और **'गुरदयाल सिंह'**। मैथिली व हिंदी के प्रख्यात उपन्यासकार नागार्जुन और पंजाब के प्रसिद्ध उपन्यासकार गुरदयाल सिंह दोनों उपन्यासकारों ने समाज की वास्तविकता और यथार्थता को अपने उपन्यास **('बलचनमा'और 'मढ़ी का दीवा')** में व्यक्त किया है, दोनों लेखकों ने अपने समय की हर एक स्थिति, चाहे वह सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक अथवा सांस्कृतिक सभी को अपने उपन्यास का विषय बना कर तत्कालीन समाज की एक –एक धड़कन को अनुभव कर इन्हीं सब कारणों से मैंने अपने लघु शोध के लिए **नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के उपन्यासों में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ (विशेष संदर्भ में 'बलचनमा' और 'मढ़ी का दीवा')** विषय का चुनाव किया है।

नागार्जुन जन साधारण के रचनाकार हैं। नागार्जुन ने आजादी से पहले जनता के साथ किए गए वायदे, लेकिन आजादी के बाद उनको क्या प्राप्त हुआ इसका बिना किसी स्वार्थ, लाग लपेट और भय से मुक्त हो कर चित्रण किया है। इसके साथ ही सामाजिक खोखलेपन, आर्थिक शोषण, रूढ़ियों अंधविश्वासों, रीति-रिवाजों लोक गीतों का यथार्थ वर्णन किया है । वैसी ही विचारधारा रखने वाले पंजाब के प्रतिभावान, कथाकार गुरदयाल सिंह का नाम पंजाबी साहित्य में अपनी विशेष पहचान रखते है।

वह जन सामान्य की भीतरी और बाहरी संवेदनाओं एवं जमीन से जुड़े कथाकार हैं। उनकी विचारधारा सतही राजनीतिक पर आधारित है। पंजाब का जन – जीवन जितना सरल और सपाट

दिखाई देता है वह उतना ही जटिल है इसका सही चित्रण पहली बार गुरदयाल सिंह के **('मढ़ी का दीवा')** उपन्यास से पता चलता है।

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध को मैंने पाँच अध्यायों में विभाजित किया है।

प्रथम अध्याय में नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के जीवन, व्यक्तित्व एवं रचना संसार से अपनी बात आरम्भ की है। उनका परिवारिक परिवेश व साहित्य को दी गई उनकी अमूल्य साहितत्यिक निधियाँ इस अध्याय में सम्मिलित हैं।

द्वितीय अध्याय में तुलनात्मक अध्ययन की बात करते हुए तुलनात्मक साहित्य के अर्थ, परिभाषा और स्वरूप तो स्पष्ट किया ही है साथ ही तुलनात्मक अध्ययन के महत्त्व पर प्रकाश भी डाला गया है।

तृतीय अध्याय सामाजिक यथार्थ : तात्त्विक विवेचन। इसमें विषय के सैद्धान्तिक पक्ष पर विस्तार से चर्चा की है समाज का अर्थ बताकर, भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों का मतों को उद्धृत कर समाज के स्वरूप को प्रस्तुत किया गया है। उनके पश्चात समाज की विभिन्न इकाइयों जैसे- व्यक्ति, परिवार और वर्ग का अध्ययन करते हुये सामाजिक संरचना को आवश्यक बताया गया है। इसी अध्याय में समाज और साहित्य, यथार्थ की अवधारणा, यथार्थ और साहित्य के अंतःसंबंधों और सामाजिक यथार्थ की स्वाभाविकता अभिव्यक्ति को भी स्पष्ट किया है।

चतुर्थ अध्याय इस अध्याय के अंतर्गत नागार्जुन एवं गुरदयाल सिंह के उपन्यासों के सामाजिक पक्ष एवं आर्थिक पक्ष का अध्ययन किया गया है। सामाजिक पक्ष को पाँच उपअध्यायों में बांटा गया है।

1- समाज की पूँजीवादी मनोवृति

2- अंधविश्वास, ब्राह्मण वर्ग और छुआछूत

3- सामाजिक विषमता का चित्रण

4- स्त्री के शोषण का चित्रण

5- नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी

इसके अंतर्गत दोनों समाजों में व्याप्त जाति भेद, जीवन मूल्यों में आ रही गिरावट, नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के संघर्ष, आर्थिक विषमताओं से त्रस्त जीवन और शोषण आदि बिन्दुओं पर चर्चा की गई है।

आर्थिक पक्ष को तीन उपअध्यायों में बांटा गया है।

1- किसान और जमींदार संघर्ष

2- आर्थिक असमानता का यथार्थ

3- जन-जीवन में बढ़ती व्यावसायिक मनोवृति

इसके अंतर्गत किसान और जमींदार संघर्ष, धन के प्रति बढ़ती लोलुपता, जमींदारों द्वारा किये जाने वाले शोषणों आदि का वर्णन किया गया है।

इस अध्याय के अंतर्गत नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के उपन्यासों के राजनीतिक पक्ष एवं सांस्कृतिक पक्ष का अध्ययन किया गया है। राजनीतिक पक्ष को दो उपअध्यायों में बांटा गया है।

1- राजनीतिक व्यवस्था का यथार्थ चित्रण

2- संघर्षरत दलित शोषित वर्ग का यथार्थ चित्रण

इसके अंतर्गत राजनीति में व्याप्त अव्यवस्था, भष्टाचार, दलित शोषित वर्ग की बेबसी, लाचारी, गरीबी, जन साधारण की घुटन आदि का वर्णन किया गया है

सांस्कृतिक पक्ष को दो उपअध्यायों में बांटा गया है।

1- रीतिरिवाज एवं संस्कृति के खोखलेपन का यथार्थ चित्रण
2- प्राचीन रूढ़ियों व अंधविश्वासों का यथार्थ चित्रण

इसके अंतर्गत रीतिरिवाज एवं संस्कृति के खोखलेपन, रूढ़ियों, अंधविश्वासों, पशु बलि, भूत प्रेत में विश्वास आदि का वर्णन किया गया है।

इस लघु शोध में वर्णात्मक, विश्लेषणात्मक और तुलनात्मक शोध प्राविधि का प्रयोग किया जायेगा।

मैं साहित्य विद्यापीठ के अधिष्ठाता प्रो. कृष्ण कुमार सिंह एवं हिंदी तथा तुलनात्मक साहित्य के विभागाध्यक्ष प्रो.सूरज पालीवाल की आभारी हूँ जिन्होंने उक्त विषय पर लघु शोध प्रबंध कार्य प्रस्तुत करने का अवसर प्रदान किया।

मैं अपने शोध निर्देशक डॉ.अशोक नाथ त्रिपाठी की जिन्होंने मुझे न सिर्फ शोध करने के लिए प्रेरित किया बल्कि कई प्रकार की सामाग्री उपलब्ध करायी और मुझे लोकतांत्रिक ढंग से कार्य करने का अवसर प्रदान किया।

लघु शोध –प्रबंध की पूर्णता मैं **'मढ़ी का दीवा'** उपन्यास के लेखक **'गुरदयाल सिंह'** जिनके दूरभाषिक प्रोत्साहन ने लगातार मुझे प्रेरित किया बल्कि कई प्रकार की सामाग्री डाक द्वारा उपलब्ध करायी, अपने विभाग के सभी अध्यापकों के साथ मैं डॉ. अनिल कुमार पाण्डेय (भाषा प्रौद्योगिकी विभाग) तथा डॉ.हरप्रीत कौर (अनुवाद विभाग) उनके प्रति मैं कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ। राहुल सांकृत्यायन केंद्रीय पुस्तकालय के सभी सदस्यों का आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से मुझे इस शोध कार्य के लिए महत्त्वपूर्ण पुस्तके उपलब्ध हो सकी।

कोई भी इंसान अपने परिवार के बिना अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँच पाता है इसलिए सबसे पहले मैं अपनी पूज्य माताजी पूज्य पिताजी व अपने बड़े भाई (रवि शंकर सिंह) के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने मुझे सदैव उच्च शिक्षा के लिए प्रोत्साहित किया।

इसके साथ ही मैं अपने दोस्तों प्रतिभा सिंह, पंकज मिश्र और अमित कुमार गुप्ता की भी आभारी हूँ जिन्होंने प्रत्यक्ष – अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य में मेरा सहयोग किया। मैं अपने सभी अग्रजों एवं सहपाठियों के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ।

विषयानुक्रमणिका

भूमिका पृ. सं.

अध्याय-1 नागार्जुन और गुरदयाल सिंह : व्यक्तित्व एवं रचना संसार 9-21

1.1 नागार्जुन व्यक्तित्व एवं रचना संसार

1.2 गुरदयाल सिंह व्यक्तित्व एवं रचना संसार

अध्याय -2 तुलनात्मक अध्ययन की सैद्धांतिकी 22-31

2.1 तुलनात्मक साहित्य : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

2.2 तुलनात्मक साहित्य : अध्ययन का महत्व

अध्याय-3 सामाजिक यथार्थ:तात्विक विवेचना 32-44

3.1 समाज : अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप

3.2 समाज और साहित्य

3.3 समाज और यथार्थ

3.4 यथार्थ की अवधारणा

3.5 सामाजिक यथार्थ

अध्याय-4 नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के उपन्यासों का सामाजिक पक्ष एवं आर्थिक पक्ष 45-68

4.1 नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के उपन्यासों का सामाजिक पक्ष

4.2 नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के उपन्यासों का आर्थिक पक्ष

अध्याय-5 **नागार्जुन एवं गुरदयाल सिंह के उपन्यासों का राजनीतिक पक्ष एवं सांस्कृतिक पक्ष** 69-83

5.1 नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के उपन्यासों का राजनीतिक पक्ष

5.2 नागार्जुन और गुरदयाल सिंह के उपन्यास का सांस्कृतिक पक्ष

उपसंहार 84-86

संदर्भ – सूची 86-89